मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने के लिए

वर्मीकम्पोस्ट

वर्मीकम्पोस्टिंग का प्रयोग केचुओं की मदद से सब्जियों के अपशिष्ट/पेड़ पौधों के अपशिष्ट/पशु अपशिष्ट को 100 प्रतिशत जैव उर्वरक में बदलने के लिए किया जाता है।

वर्मीकल्चर तकनीक के प्रयोग से सभी प्रकार के कूड़ें एवं जैव अपशिष्ट को प्रभावी रूप से विभिन्न फसलों में उच्च गुणवत्ता वाली खाद में बदला जा सकता है।

वर्मीकम्पोस्ट में वृद्धि को बढ़ावा देने वाले हार्मोन सहित काफी मात्रा में जैव कार्बन, कृमि मल, एंजायम, एन.पी.के. और प्राथमिक एवं द्वितीयक खनिज पदार्थ होते हैं।

वर्मीकम्पोस्टिंग मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाने में सहायता करती है जिससे उत्पादन बढता है।

राष्ट्र जैविक खेती केन्द्र, गाजियाबाद के निष्कर्ष के अनुसार 5 मीट्रिक टन वर्मीकम्पोस्ट/हेक्ट. का प्रयोग करने पर पोषक तत्वों की मात्रा बढ़ती है और रासायनिक खाद के उपयोग में 20 से 25 प्रतिशत कमी होती है।

सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि वर्मीकम्पोस्ट को पेड़ पौधों की जड़ो द्वारा आसानी से सोख लिया जाता है।

कृषि सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं जैसे पीकेवीवाई, आरकेवीवाई और एमआईडीएच के माध्यम से वर्मीकम्पोस्टिंग को बढ़ावा देता है।

वर्मीकम्पोस्ट – जीवित मिट्टी की निशानी

सत्यमेव जयते

कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

भारत सरकार

davp 65101/13/038/1516